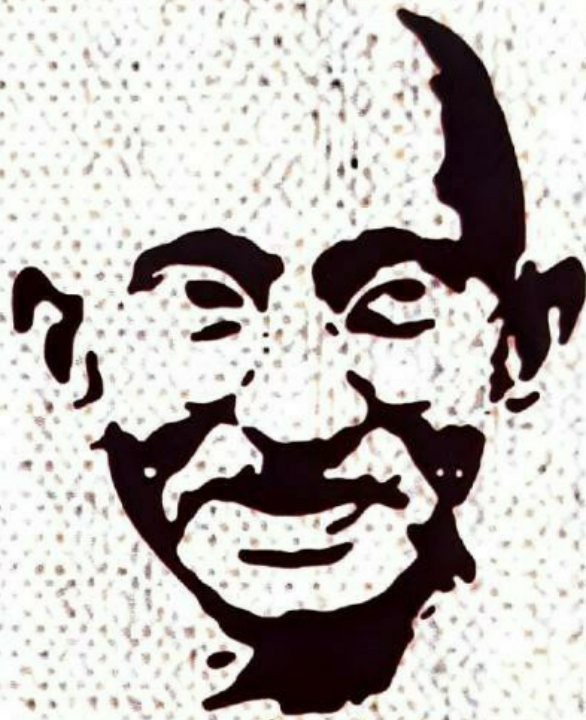


77

जुलाई-दिसम्बर, 2019



सनातन गाँधी से संवाद

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

21वीं शताब्दी में गाँधी-विचार का औचित्य

पंकज सिंह

“हिंसा पहली बार सुकरात के सामने सकुचाई थी, ईसा, बुद्ध एवं महावीर के समक्ष हिंसा सहम गयी थी। लेकिन गाँधी के सामने हिंसा भयभीत हो गई थी।” - अम्बिकादत्त शर्मा

आधुनिकता और भूमण्डलीकरण के इस दौर में मानव ने न सिर्फ प्रकृति से मुँह मोड़ लिया है बल्कि परम्परा, सृजन और कल्याण की अवधारणा भी लुप्त हो गई है। आज के दौर में धर्म असहिष्णु हो रहा है तो राष्ट्रवाद के मायने बदल रहे हैं। संस्कृति में अलगाव और अराजकता का प्रभाव बढ़ रहा है। विश्व पटल पर हमें कुछ ऐसे प्रबुद्ध व्यक्तियों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने अपने समय और समाज को तो प्रभावित किया है बल्कि उनके कार्य, चिन्तन और दर्शन अपने समय से भी आगे था। महात्मा गाँधी ऐसे ही एक असाधारण व्यक्ति हुये जिन्हें हम एक राष्ट्र की परिपाटी में बाँधकर नहीं रख सकते। वर्तमान में दुनिया मानवीय इतिहास के संकटपूर्ण दौर से गुजर रही है और उसे एक विकल्प की तलाश है। हालांकि मार्क्सवाद ने पूंजीवाद का एक विकल्प दिया था लेकिन अपने अंतर्निहित विरोधाभासों के कारण मार्क्सवादी प्रयोग भी नाकाम हो गया। ऐसी स्थिति में लोगों की उम्मीदें गाँधी के विचारों से ही जुड़ी हैं जो कि उन्हें एक विकल्प प्रदान करता है।

गाँधीजी के संबंध में भारत के महान् शिक्षाविद् एवं दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का विचार है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि सामान्य स्तर से ऊपर उठकर कोई असाधारण आत्मा, जिसने ईश्वर के विषय में अधिक गहराई से चिंतन किया है, दैवी हेतु का अधिक स्पष्टता के साथ प्रतिसंवेदन करती है और दैवी मार्गदर्शन के अनुरूप वीरतापूर्वक आचरण करती है। ऐसी महान आत्मा का आलोक अंधकारमय और अस्तव्यस्त संसार के लिए प्रखर संकेत दीप का काम देता है। गाँधीजी उन पैगम्बरों में से एक हैं जिनमें हृदय का शौर्य, आत्मा का शील और निर्भीक व्यक्ति की हंसी के दर्शन होते हैं। गाँधीजी का जीवन और गाँधीजी के उपदेश उन मूल्यों के साक्षी हैं, जो राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय की सीमा से परे सार्वभौम हैं और जो युगों से इस देश की धरोहर रहे हैं—आत्मा में आस्था, उसके रहस्यों के प्रति आदर-भाव, पवित्रता में निहित सौंदर्य, जीवन के कर्तव्यों का स्वीकार, चरित्र की प्रामाणिकता।

आज दुनिया निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी है जिससे उसकी रक्षा करना काफी कठिन दिखाई दे रहा है। इसके कारण हैं सतत वैचारिक संघर्ष, विकट जातीय द्वेष जिनके परिणामस्वरूप ऐसे युद्ध छिड़ सकते हैं जिनकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी, और परमाणु अस्त्रों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि का बराबर बना हुआ खतरा जिससे अकल्पनीय विनाश की नौबत आ सकती है। ऐसी सूरत में, मानव जाति को